

lR; opu

ikxke u- 328

: r & 3%12 & 4%5

प्रिय मित्रों,

प्रभु यीशु के पवित्र नाम में आपको मेरा नमस्कार! मैं आशा करता हूँ कि आप सब कुशल हैं और फिर से आज परमेश्वर के वचन में से सीखने के लिए तैयार बैठे हैं।

तो आइए अध्ययन से पहले प्रार्थना करें –

मित्र हम : r 3%12 in में पढ़ते हैं,

“और सच तो है कि मैं छुड़ानेवाला कुटुम्बी हूँ, तौभी एक और है जिसे मुझ से पहले ही छुड़ाने का अधिकार है।”

बोअज़ कैसे जानता था कि उससे पहले भी कोई है। उसने पहले से ही खोज कर ली थी। आपने ध्यान दिया, रूत से हरी झण्डी पाते ही वह तैयार था। वह तो इस पल की प्रतीक्षा में ही था परन्तु क्योंकि उससे पहले भी एक कुटुम्बी था, उसके हाथ बंधे हुए थे।

हो सकता था कि यह कुटुम्बी बोअज़ से भी अधिक धनवान था। अब यदि बोअज़ फसल की कटनी के छः सप्ताहों में अपनी ओर से रूत से कहता कि वह उसका कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनना चाहता है तो सम्भावना थी कि रूत कहती, “नहीं, धन्यवाद मैं उस कुटुम्बी को समय आने पर अपनाऊँगी। वह आपसे अधिक धनवान है और मैं उसी का हाथ थामना चाहूँगी।” तो बोअज़ को बहुत दुःख होता। उसे रूत के संकेत की प्रतीक्षा करना थी। अब जिस पल रूत ने उस पर अपनी इच्छा प्रगट की उसी पल उसने कहा, “मुझ से पहले एक और कुटुम्बी है और पहला स्थान उसका है।” कहने का अर्थ यह था कि पहले इस समस्या का समाधान किया जाना आवश्यक है। मेरे विचार में, वह एलीमेलेक का भाई था, रूत के पति का चाचा। इस कारण बोअज़ ने कहा, “मैं तेरा कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनूँगा परन्तु मुझे पहले इस कुटुम्बी से परामर्श करना होगा कि उसकी क्या राय है।”

: r 3%13 में हम पढ़ते हैं,

“अतः रात भर ठहरी रह, और सवेरे यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करना चाहे; तो अच्छा, वही ऐसा करे; परन्तु यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करना न चाहे, तो यहोवा के जीवन की शपथ मैं ही वह काम करूँगा। भोर तक लेटी रह।”

दूसरे शब्दों में, बोअज़ दुविधा में था कि यदि वह कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनना चाहेगा तो ऐसी स्थिति में वह क्या करेगा। इस कुटुम्बी से छुटकारा पाने की उसके पास एक योजना थी। वह बार—बार इस शब्द “छुड़ानेहारे” पर बल दे रहा था। इस कुटुम्बी को रूत की संपदा को छुड़ाना था क्योंकि रूत ने उसे अपने पति से विरासत में पाई थी। और वही उसका वास्तविक छुड़ानेहारा भी था। पहला स्थान उसी का था। बोअज़ रूत से कहता है कि वह रात वहीं बिताए। वह नहीं चाहता था कि रूत इतनी देर रात में बैतलहम लौटे। उस युग में भी सड़कें रात में सुरक्षित नहीं होती थीं। न्यायियों की पुस्तक में उल्लेख है कि यात्री मुख्य मार्ग से यात्रा नहीं करते थे क्योंकि वे सड़कें सुरक्षित नहीं थीं। वे खेतों में होकर चलते थे। बोअज़ इस युवती की रक्षा करना चाहता था।

: r 3%14 में हम पढ़ते हैं,

“तब वह उसके पाँवों के पास भोर तक लेटी रही, और इस से पहले कि कोई दूसरे को पहचान सके वह उठी। तब बोअज़ ने कहा, कोई जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्त्री आई थी।”

इस घटना को गुप्त रखने कारण स्पष्ट है कि बोअज़ नहीं चाहता था कि यह पहला कुटुम्बी इस बात को जाने अन्यथा वह बोअज़ को मार्ग से हटाकर रूत को पाना चाहेगा। बोअज़ स्वयं इस विषय को निपटना चाहता था। अब वह अगला कदम उठाता है।

: r 3%15 में हम पढ़ते हैं,

“तब बोअज़ ने कहा, जो चदर तू ओढ़े है उसे फैलाकर पकड़ ले। और जब उसने उसे पकड़ा तब उसने छः नपुए

जौ नापकर उसको उठा दिया; फिर वह नगर में चली गई।”

दूसरे शब्दों में वह उसे उदारतापूर्वक दान देता है।

: r 3॥16 में हम पढ़ते हैं,

“जब रूत अपनी सास के पास आई तब उस ने पूछा, हे बेटी, क्या हुआ? तब जो कुछ उस पुरुष ने उससे किया था वह सब उसने उसे कह सुनाया।”

मैं ने कुछ टीकाकारों को पढ़ा है। वे नाओमी के इस प्रश्न, “हे बेटी, क्या हुआ?” का अर्थनिर्धारण उचित नहीं करते हैं। हमें यहाँ पृष्ठभूमि समझना है। मेरे विचार में जब नाओमी ने रूत से कहा था कि वह श्रृंगार करके बोअज़ के खलिहान में जाए तब रूत सम्भवतः पीछे हट रही थी क्योंकि नाओमी ने उसे पहले ही समझा दिया था कि वह जाति-बाहर की है। अतः वहाँ उसके पुनर्विवाह की कोई सम्भावना नहीं होगी। उसने नाओमी से कहा, “मैं बोअज़ को अपना नहीं चाहती हूँ।” नाओमी ने कहा, “मैं समझ गई हूँ कि वह तुझ में रुचि रखता है और विवाह करना चाहता है। अतः अब जो मैं कहती हूँ सुन और ठीक वैसा ही कर।” मेरे विचार में तो उसने रूत को बलपूर्वक भेजा था। अतः जब वह सुबह घर लौटी तो उसने पूछा, “हे बेटी, क्या हुआ? तू श्रीमती बोअज़ बनी की नहीं?” दूसरे शब्दों में, “क्या मेरा कहना सही था?” निःसन्देह उसका कहना सही था।

: r 3॥17&18 में हम पढ़ते हैं,

“फिर उसने कहा, यह छः नपुए जौ उसने यह कहकर मुझे दिया, कि अपनी सास के पास छूछे हाथ मत जा।

उसने कहा, हे मेरी बेटी, जब तक तू न जाने कि इस बात का कैसा फल निकलेगा, तब तक चुपचाप बैठी रह, क्योंकि आज उस पुरुष को यह काम बिना निपटाए चैन न पड़ेगा।”

रूत अब तुम आराम करो। अब आगे का काम बोअज़ सम्भालेगा। तुम उस पर भरोसा रखो। छुड़ाने का काम अब उसका है।

मेरे मित्रों, यह एक सौभाग्य है कि हमारे पास एक मुक्तिदाता है। जिसमें हम भरोसा रख सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं कि वह हमारा मुक्तिदाता है। ओह! आज वह कैसा वरदान है! उसने मुक्ति का काम पूरा कर दिया है। आपको और मुझे निमंत्रण है कि हम मुक्ति के विश्राम में प्रवेश करें क्योंकि कार्य पूरा हो चुका है। आपको स्मरण होगा कि अपनी महायाजकीय की प्रार्थना में उसने पिता परमेश्वर से कहा था – यूहन्ना 17:4, “जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।” यह कार्य क्रूस पर किया गया मुक्ति का कार्य था। जब वह क्रूस पर लटका हुआ था तब आपको स्मरण होगा कि उसने कहा था, “पूरा हुआ” (यूहन्ना 19:30)। और इस पुकार के साथ ही आपकी और मेरी मुक्ति संपन्न हुई। उसने आपके पापों का दण्ड चुका दिया था और अब आपको अपने उद्धार के निमित्त छोटी उंगली उठाने की भी आवश्यकता नहीं है। उसने ही सब कुछ कर दिया है।

ई. एम. हाल ने लिखा,

यीशु ने पूरा मूल्य चुकाया,

उसी का मैं ऋणी हूँ,

पाप का लाल दाग था

उसने बर्फ सा श्वेत धोया।

मुक्ति दिलाना उसका कार्य था। आपको और मुझे तो केवल मुक्ति के इस सिद्ध कार्य में प्रवेश करना है जो उसने हमारे लिए किया। उस पर विश्वास करनेवाले के मन में एक अद्भुत शान्ति व्याप्त हो जाती है क्योंकि उसे यह समझ में आ जाता है कि उसने यह कार्य पूरा कर लिया है। सच तो यह है कि परमेश्वर को आपको नगण्य प्रयास या मेरे नगण्य प्रयास की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर हमारे उद्धार के कार्य में हमारी ओर से किसी भी प्रयास की आशा नहीं रखता है। पहली बात, तो यह है कि आपके और मेरे पास है ही क्या कि हम उसे दें। आप और मैं तो कंगाल हैं। हमें तो उसी के पास जाना पड़ता है कि जीवन की एक एक वस्तु प्राप्त करें। यही तो क्रूस की ठोकर है जिसके बारे में पौलुस गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं को लिख रहा था क्योंकि आज भी ऐसे अनेक जन हैं जो अपने चरित्र, अपने परिवार या अपनी कलीसिया के बारे में गर्व करते हैं। उनकी समझ में कलीसिया की सदस्यता उद्धार का पर्याय

शब्द है। वे सोचते हैं कि यदि आप कलीसिया के नियमित एवं अच्छे सदस्य हैं तो परमेश्वर ने आपको स्वीकार कर लिया है। इससे हटकर सत्य है ही नहीं परन्तु सच तो यह है कि परमेश्वर आपके और मेरे प्रयास का अभिलाषी नहीं है। मुक्ति कार्य या उद्धार सम्पूर्ण रूप से उसी का कार्य है। वह क्रूस पर मनुष्य के पुत्र के रूप में ऊँचा उठाया गया था। यूहन्ना 3:14-15 में लिखा है, “जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए।” यह क्रूस पर किए गए उसके कार्य के आधार पर है कि परमेश्वर आपको और मुझे बचाता है। यही कारण था कि वह 2000 वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर मनुष्य बन कर आया। इब्रानियों का लेखक कहता है – 10:5, “मेरे लिए एक देह तैयार की...” परमेश्वर को बलि और भेंट की आवश्यकता नहीं थी। पुराने नियम में सब पशुबलियाँ यीशु के आगमन की ओर संकेत करती थीं। वे मनुष्य को दी गई थीं कि मसीह के आगमन की तैयारी करें – संसार के मुक्तिदाता के आगमन की। उसे ग्रहण करना और उसे स्वीकार करने से ही हमारा उद्धार होता है। वही उद्धारकर्ता या मुक्तिदाता है। यहां तक कि हमारा विश्वास भी हमें उद्धार नहीं दिलाता है। केवल मसीह हमें उद्धार दिलाता है। श्री चार्ल्स स्पर्जन ने कहा, “यह मसीह पर आपकी पवित्र पकड़ नहीं जो आपका उद्धार करती है, यह मसीह है। यह मसीह में आपका आनन्द नहीं जो आपका उद्धार करता है, केवल मसीह। यह मसीह में आपका विश्वास भी नहीं यद्यपि वह साधन है, यह केवल मसीह का लहू और उसकी योग्यता है।” तो देखा आपने कि विश्वास केवल हमें मसीह द्वारा खरीदे गए उद्धार को पकड़ने में सहायक है। आज आप उसमें विश्वास करें या विश्वास न करें, दो में से एक ही बात है। बीच का कोई मार्ग नहीं है। आप या तो उसमें विश्वास करें या अपनी मुक्ति के लिए स्वयं कार्य करें।

इस प्रकार रूत अध्याय 3 का अन्त नाओमी के आश्वासन के वचनों से होता है, “आज उस पुरुष को यह काम बिना निपटाए चैन न पड़ेगा।” वह रूत से कहती है, “हे मेरी बेटी... चुपचाप बैठी रह।” तेरे लिए अब करने को कुछ नहीं है। तू ने उसे छुड़ानेहारा बनाया, बस यही वह चाहता था। छुड़ाने का काम अब उसका है।

v/;k; 4

जिस प्रकार रूत मोआब से आकर बोअज़ के मन में और कुटुम्ब में बस गई उसी प्रकार हम भी जो परमेश्वर से दूर परदेशी थे, जिनके पास आशा नहीं थी, अब मसीह के लहू द्वारा निकट लाए गए हैं। आज हम परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं। हम उसके मन में बस गए हैं और एक दिन हम उसके साथ उसके घर में वास करेंगे। यह हमारा कैसा अद्भुत एवं महिमामय भविष्य है कि एक दिन हम उसके साथ होंगे!

इस अध्याय में हम बोअज़ का काम देखेंगे। अब तक वह एक ओर शान्त खड़ा था परन्तु अब अपनी भूमिका निभाने के लिए स्वतंत्र है क्योंकि रूत ने उसे अपना कुटुम्बी मुक्तिदाता स्वीकार कर लिया था। मैं उदारपूर्वक आपसे कहता हूँ मेरे मित्रों, मसीह भी बोअज़ के समान आपके लिए कुछ करने में सक्षम नहीं है जब तक कि आप उसे अपना कुटुम्बी मुक्तिदाता स्वीकार न करें। मसीह आपके लिए क्रूस पर मर गया। वह आपके लिए नरक से गुज़रा और वह आज आपके मन के द्वार पर खड़ा दस्तक देता है। वह कह रहा है – प्रकाशितवाक्य 3:20, “देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।” परन्तु वह द्वार नहीं तोड़ेगा। आपको उसे भीतर बुलाना होगा। परमेश्वर मसीह यीशु में अनन्त जीवन का वरदान देता है। आवश्यकता इस बात की है कि आप अपना हाथ बढ़ा कर उस वरदान को विश्वास के द्वारा ग्रहण करें। विश्वास के द्वारा ही आप मसीह को ग्रहण करें।

बोअज़ अब कुटुम्बी छुड़ानेहारे की क्षमता में कार्य करने के लिए तैयार है। रूत को तो केवल प्रतीक्षा करनी है कि वह सब प्रबन्ध करे। अब वह खुलकर उसे अपनाएगा। वह वास्तव में अपना सब कुछ वरन् स्वयं को ही दाँव पर लगा देगा क्योंकि वह उसे चाहता है। वह उससे प्रेम करता है। यही इस पुस्तक का महान सन्देश है: मुक्ति एक रोमांच है। क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है इसलिए हमें छुड़ाता है।

: r 4%1 में हम पढ़ते हैं,

“तब बोअज़ फाटक के पास जाकर बैठ गया; और जिस छुड़ानेवाले कुटुम्बी की चर्चा बोअज़ ने की थी, वह भी आ

गया। तब बोअज़ ने कहा, हे मित्र, इधर आकर यहीं बैठ जा। तो वह उधर जाकर बैठ गया।”

“तब बोअज़ फाटक के पास जाकर बैठ गया।” क्यों? क्योंकि उस युग में नगरद्वार एक प्रकार का न्यायालय होते थे। वहीं न्यायालय की सुनवाई होती थी।

उस युग में नगर के चारों ओर सुरक्षा के लिए दीवारें होती थीं कि बैरी प्रवेश न कर पाएँ या लुटेरे न आएँ। नगर बहुत संकीर्ण होता था, सड़कें सकरी थीं और मकान पास-पास बने होते थे। आप आज भी बैतलहम और यरुशलम के नक्शे का यही रूप देख सकते हैं। वहाँ प्राचीन नगर आज भी यही परिदृश्य प्रदान करते हैं। रूत के युग में बैतलहम ऐसा ही था। अतः नगरद्वार ही एकमात्र स्थान था जहाँ से कोई बाहर जा सकता था या भीतर आ सकता था। अतः यदि आपको किसी से भेंट भी करना होती थी तो आप वहाँ जाकर बैठ जाएँ और आपकी भेंट अवश्य उस मनुष्य से होगी। वहाँ जाने में बोअज़ के पास दो कारण थे। वहाँ न्यायालय लगता था और उसे अपने इस कुटुम्बी को न्यायालय में लाना था। दूसरा कारण यह था कि उसे पक्का विश्वास था कि वह कुटुम्बी कभी न कभी वहाँ आएगा। अतः वह वहाँ जाकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। अब मुझसे यह नहीं पूछना कि उसने वहाँ कितने समय प्रतीक्षा की। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसने बहुत लम्बी प्रतीक्षा की। अन्ततः वह पुरुष वहाँ आया। मैं उनके सम्बन्ध को नहीं जानता क्योंकि उस समय सम्बन्धों का विशेष उल्लेख नहीं किया जाता था। बस उनका यही था कि कोई आपका कुटुम्बी है या नहीं है। भाई या चाचा या किसी भी सम्बन्धी के लिए एक ही शब्द था। मैं जहाँ तक समझता हूँ यह कुटुम्बी एलीमेलेक का भाई था। एलीमेलेक नाओमी का पति था। अतः वह रूत के स्वर्गवासी पति का चाचा था। बोअज़ ने उसे देखा और कहा, “हे मित्र” अब एक प्रश्न उठता है, “क्या वह उसका नाम नहीं जानता था?” वह निश्चय ही उसका नाम जानता था। हम भी ऐसा ही करते हैं, या कर चुके हैं, मुझे पूरा विश्वास है। नाम जानते हुए भी कभी-कभी अकस्मात् ही हम किसी का नाम नहीं पुकार पाते हैं और बोअज़ अधीरता के कारण उसका नाम नहीं ले पाया। मुझे पूरा विश्वास है कि बोअज़ उसका नाम जानता था। दोनों ही बैतलहम में रहते थे और सगे सम्बन्धी थे। वह आकर बैठ गया। बोअज़ के शब्द उसके लिए आज्ञा स्वरूप थे। मेरे विचार में उसकी प्रतिक्रिया रही होगी, “बोअज़ को हो क्या गया है? यह कटनी का समय है। किसी के पास समय नहीं है और बोअज़ मुझे रोक रहा है। निश्चय ही कोई अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय है। अति विचित्र बात है!” अतः वह जिज्ञासावश रुक गया कि बोअज़ के मन में ऐसी क्या बात है?

: r 4॥2 में हम पढ़ते हैं,

*“तब उस ने नगर के दस वृद्ध लोगों को बुलाकर कहा,
यहीं बैठ जाओ। वे भी बैठ गए।”*

स्पष्ट है कि ये दस वृद्ध न्यायी थे। यह न्यायालय था। न्यायालय का कार्य आरम्भ हो चुका था। आपने उत्पत्ति की पुस्तक में देखा है सदोम नगर में आनेवाले उन दूतों ने लूत को नगरद्वार पर बैठा पाया था। लूत उस नगर का उपन्यायी था। उस युग में भी नगरद्वार न्यायालय का काम करते थे। नगरद्वार में बैठनेवाले पुरुष न्यायी होते थे। अतः बोअज़ ने न्यायालय में प्रार्थना रखी और वे सुनवाई के लिए तैयार हो गए। बोअज़ का वाद तैयार था। उसकी युक्ति पर ध्यान दीजिए—अति प्रशंसनीय!

: r 4॥3 में हम पढ़ते हैं,

*“तब वह उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी से कहने लगा, नाओमी
जो मोआब देश से लौट आई है, वह हमारे भाई एलीमेलेक
की एक टुकड़ा भूमि बेचना चाहती है।”*

देखिए बोअज़ अपनी बात कैसे प्रस्तुत करता है। उसकी मुख्य रुचि रूत में थी परन्तु वह उसका नाम आरम्भ में नहीं लेता है। क्या इस पद से संकेत मिलता है कि बोअज़ भी एलीमेलेक का भाई था? इब्रानी भाषा में इस शब्द, भाई का अर्थ था निकट सम्बन्धी। वास्तव में इन दोनों पुरुषों के एलीमेलेक से सम्बन्धों में अन्तर था। या एक कुटुम्बी दूसरे से अधिक निकट कुटुम्बी नहीं था। उसे बोअज़ से अधिक निकट कुटुम्बी होना था। बोअज़ कहता है कि विषय भूमि के एक टुकड़े का है। हम भूमि छुड़ानेवाले कुटुम्बी का नियम देख चुके हैं। यह नियम उस समय प्रभावी होता था जब किसी की भूमि किसी कारण किसी अन्य मनुष्य के हाथ में चली जाती थी। नाओमी का परिवार अकाल के समय चला गया था। जब वह लौटकर आई तब उसके पास कुछ नहीं था। उसे अपनी भूमि पुनः प्राप्त करने के लिए जुबली वर्ष तक प्रतीक्षा करनी थी और मेरे विचार में वह समय बहुत दूर था। अब क्या होगा? क्या कोई कुटुम्बी छुड़ानेहारा आगे आएगा? बोअज़ इस कुटुम्बी का ध्यान रूत की अपेक्षा एलीमेलेक की भूमि की ओर आकर्षित करता है। वह पूछता है कि क्या वह कुटुम्बी उस भूमि का छुड़ाएगा? मेरे विचार में यह तार्किक युक्ति है। व्यक्ति के छुड़ाए जाने से पूर्व उसकी भूमि छुड़ाना आवश्यक था। अतः बोअज़ ने कहा,

: r 4%4 में हम पढ़ते हैं,

"इसलिये मैं ने सोचा कि यह बात तुझे को जताकर कहूँगा, कि तू उसको इन बैठे हुआ के सामने और मेरे लोगों के इन वृद्ध लोगों के सामने मोल ले। यदि तू उसको छुड़ाना चाहे, तो छुड़ा; और यदि तू छुड़ाना न चाहे, तो मुझे ऐसा ही बता दे, कि मैं समझ लूँ: क्योंकि तुझे छोड़ उसके छुड़ाने का अधिकार और किसी को नहीं है, और तेरे बाद मैं हूँ।" उस ने कहा, "मैं उसे छुड़ाऊँगा।"

दूसरे शब्दों में बोअज़ उसे यथोचित मान प्रदान करता है। अब प्रश्न यह है कि क्या वह कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनना चाहता है? क्या वह नाओमी के लिए, जुबली वर्ष से पूर्व, उसकी भूमि छुड़वाएगा? अब रोचक बात तो यह है कि वह तैयार हो गया, "मैं उसे छुड़ाऊँगा।" इससे प्रगट होता है कि वह एक दयालु व्यक्ति था और वह इस सम्बन्ध में अपना कुटुम्बी उत्तरदायित्व निभाना चाहता था। मैं जहाँ तक समझता हूँ कि यदि कोई पुरुष कुटुम्बी छुड़ानेहारा न हो तो उसकी आलोचना की जाती थी वरन् उसका अपमान होता था। मेरे विचार में उसके हाँ कहते ही बोअज़ का दिल बैठ गया होगा परन्तु वह हिम्मत हारने वाला नहीं था। वह तो इस स्थिति के लिए तैयार ही था और अब वह अपनी बात प्रगट करता है कि भूमि छुड़ाने से बढ़कर एक बात और है।

: r 4%5 में हम पढ़ते हैं,

"फिर बोअज़ ने कहा, जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब तुझे उसे रूत मोआबिन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस विचार से मोल लेना पड़ेगा, कि मरे हुए का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे।"

जैसे कि बोअज़ कह रहा हो, "मैं तुझे यह बताना भूल गया कि इस भूमि के सम्बन्ध में तुझे एक बाधा का सामना करना होगा। रूत नाम की एक युवती है जो मोआबी है और इस भूमि से संबन्धित है क्योंकि उसने एलीमेलेक के पुत्र से विवाह किया था। अब क्योंकि एलीमेलेक और उसका पुत्र मर चुके हैं, वह इस भूमि का वारिस है। अतः उस भूमि के साथ-साथ तुझे उस मोआबी स्त्री को भी छुड़ाना होगा अर्थात् उससे विवाह करना होगा क्योंकि वह इस भूमि से बंधी

हुई है।” मेरे विचार में, बोअज़ ने समस्या स्पष्ट कर दी थी। आप देख सकते हैं कि बोअज़ ने रूत की नागरिकता उसे साफ—साफ बता दी थी, “वह एक मोआबिन है।” मूसा की व्यवस्था व्यवस्थाविवरण अध्याय 23 पद 3 में विशेष करके कहती है, “कोई अम्मोनी या मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए।” इसका अर्थ यह हुआ कि रूत से विवाह करके वह अपनी ही भूमि संकट में डाल देगा। परन्तु बोअज़ यह खतरा उठाने के लिए तैयार था। सच तो यह है कि बोअज़ खुशी—खुशी ऐसा करेगा। वह उससे प्रेम करता था और कैसा भी बलिदान करने के लिए तैयार था। यह दूसरा कुटुम्बी रूत को नहीं जानता था। वह तो केवल उसे एक मोआबिन समझता था। उसने चाहे उसकी कितनी भी प्रशंसा सुनी हो वह निश्चय ही उससे विवाह नहीं करना चाहता था और उसने स्पष्ट कर दिया।